Issue - 13
Vol. - 1 (April-June, 2016)

ISSN - 2322-0171

ICRJIFR,
IMPACT FACTOR
8.2856

Peer Reviewed & Referred
International Research Journal of
Higher Education
Quarterly Bilingual

A FREE LANCE

Editor-in-Chief
Dr. Amit Jain

An official publication of
Amit Educational and Social
Welfare Society (Regd.)
Firozabad (U.P.)

A Free Lance

(International Research Journal of Education
Quarterly Bilingual)

INDEX

S.No.	Research Papers	Pages
1-	सूचना प्रौद्योगिकी का बढ़ता वर्चस्व (समाजशास्त्रीय विवेचन) डा0 अन्जू	1-3
2-	**A Study on Job Stress of Nationalized and Corporate Sector Bank Employees** Dr. Vineeta Srivastava	4-6
3-	**E- Learning: An Earnest Need** Pramod kumar Rajput, Prof. Usha Dhulia	7-10
4-	व्याकरण की दृष्टि से पद–विचार ऋषि प्रकाश	11-15
5-	सन्त काव्यों में सद्भावना डॉ0 संजीव मोहन शर्मा	16-21
6-	**Child Development And Role of Parents** Dr. Pradeep Kumar	22-26
7-	**Working Life and Betterment of the Society** Dr. Amit Jain	27-32
8-	हिन्दी रंगमंच के विभिन्न आयाम एवं योगदान सुमन यादव, डॉ0 कामेश्वर प्रसाद सिंह	33-37
9-	भारतीय संगीत में थाट और राग की महिमा Balram Yadav, Deepika Logani Tirkha	38-42
10-	**Socio-Economic Impact Of Forest Products On Tribal Women Vendors: A Study On Roadside Tribal Markets In West Tripura District** Sharmistha chakraborty	43-48
11-	**A Vision Towards Environmental Citizenship** Dr. Mridula Singh	49-52
12-	स्वामी दयानन्द के अनुसार 'ओउम्' का निरुपण राकेश कुमार, पूनम रानी	53-57
13-	वैशेषिक दर्शन में प्रमाण मीमांसा पूनम रानी	58-60
14-	भारतीय दर्शनों में योग साधना सुभाष चन्द्र	61-67
15-	कवि घनानन्द के काव्य में शैली के विविध रूप डॉ0 जैसमिन करूणा	68-72
16-	शिक्षा का गुणात्मक स्तर एवं प्रभावित करने वाले कारक मनीषा कुमारी विजय	73-75
17-	संयुक्त एवं एकल परिवार के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन डॉ. आभा सिंह	76-81
18-	आध्यात्मिक शिक्षा से व्यक्ति का आत्मपरावर्तन डॉ. सरोज राय	83-87

ISSN - 2322-0171

"संयुक्त एवं एकल परिवार के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. आभा सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
शिक्षा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूं नागौर

प्रस्तावना :

जीवन के प्रथम वर्ष में बालक पूर्ण रूप से अपने माता–पिता एवं समाज के दूसरे सदस्यों पर निर्भर रहता है। किशोर बनते–बनते उसकी शारीरिक, मानसिक एवं सांवेगिक क्षमताएं पूर्ण विकसित हो जाती है। उसे कल्पना लोक एवं यथार्थ की दूनिया का काफी ज्ञान हो जाता है। यह ज्ञान उसे अपने माता–पिता एवं सामाजिक बन्धनों से मुक्ति के लिए प्रेरित करता है। वह स्वतन्त्र होना चाहता है तथा जीवन को अपनी सोच के अनुसार दिशा प्रदान करना चाहता है। उसकी इस प्रवृत्ति को कुछ मनोवैज्ञानिक "मनोवैज्ञानिक जागृति" कहते हैं। जिसका अर्थ है कि बालक स्वयं अपने पैरों पर खड़ा होना चाहता है व अपने निर्णय स्वयं लेना चाहता है। भविष्य की योजना तथा अपने जीवन को स्वयं संवारना चाहता है।

किशोरावस्था मनुष्य के जीवन का बसंतकाल माना गया है। यह काल बारह से उन्नीस वर्ष तक रहता है। यह काल भी सभी प्रकार की मानसिक शक्तियों के विकास का समय है। बालक की कल्पना शक्ति का विकास होता है। बालक भविष्य में जो कुछ होता है, उसकी पूरी रूपरेखा उसकी किशोरावस्था में बन जाती है। जिस बालक ने धन कमाने का स्वप्न देखा, वह अपने जीवन में धन कमाने में लगता है। जो बालक किशोरावस्था में समाज सुधारक और नेतागिरी के स्वप्न देखते हैं वे आगे चलकर इन बातों में आगे बढ़ते हैं। बच्चे कैसा आचरण करें, इसका निर्णय अनौपचारिक रूप से माता–पिता समाज के बड़े–बूढ़े या स्कूल करते हैं। यह सर्वविदित है कि कोई बालक अथवा व्यक्ति किसी एक विशिष्ट समय में जो कुछ भी होता है वह इसका परिणाम होता है कि जीवन के आरम्भ में वह किस वातावरण में था। उसका पारिवारिक परिवेश कैसा था। परिवार व्यक्ति का प्रथम सामाजिक पर्यावरण है। परिवार का बच्चों के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। परिवार बच्चे के जीवन को संस्कारित करता है। उन पर अमिट छाप डालता है और उनके व्यक्तित्व के निर्माण में योग देता है। परिवार का स्वरूप भिन्न–भिन्न प्रकार का हाता है जिसमें हमने एकल परिवार एवं संयुक्त परिवार को मुख्य माना है। भारतीय परिवारों के सदस्यों के पारस्परिक सम्बन्धों का बालकों के व्यक्तित्व, शिक्षा, भावनाओं तथा शिक्षा उपलब्धियों पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है।

औचित्य :

आज भौतिकवादी युग में हर तरफ उच्च आर्थिक संसाधनों की प्राप्ति के लिए प्रतियोगिता होती नजर आती है। ऐसे में अभिभावकों की अपने बच्चों के प्रति अपेक्षाएं बढ़ती जा रही है। वे बच्चों को उनकी रूचि योग्यता के आधार पर विषय का चुनाव न करके अपनी आकांक्षा के आधार पर उनहें विषय का अध्ययन करवाते हैं। परिणामस्वरूप बच्चे अपनी योग्यता से अधिक आकांक्षा रखने लगते है। परिणामस्वरूप जब उनकी उच्च आकांक्षा के अनुरूप नहीं आ पाता तो वे कुण्ठित हो जाते हैं तथा या तो मानसिक दबाव के शिकार हो जाते हैं अथवा आत्महत्या कर लेते हैं योग्यता से अधिक आकांक्षा का ही परिणाम है कि जब माध्यमिक व उच्च माध्यमिक बोर्ड का परीक्षा–परिणाम घोषित होता है तो दूसरे दिन के समाचारों में कई विद्यार्थियों की आत्महत्या की खबरें प्रकाशित होती है।

शोधकर्त्री ने अपनी समस्या के क्षेत्र में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का चयन इस कारण किया है कि किशोरावस्था में मन उलझन भरी कठिन परिस्थितियों के कारण झिझक, संकोच अस्वीकार

किये जाने का भय एवं भविष्य की चिन्ता बराबर बनी रहती है। किशोर मन अस्थिर होता है। इसका प्रभाव उसकी आकांक्षा पर भी पड़ता है। वह अपने को साबित करने के लए उच्च आकांक्षा पाल लेता है। अधिकांश माता–पिता यह चाहते हैं कि उनका बच्चा ही कक्षा में अव्वल आये। ऐसे में बालकों पर अभिभावकों की आकांक्षा उनकी आकांक्षा को प्रभावित करती है। उन्हें उनकी क्षमता से अधिक आकांक्षा रखने की आदत पड़ जाती है व जब यही आकांक्षा पूरी नहीं हो पाती तो बालक कुसमायोजित हो जाते हैं। संयुक्त परिवार में परिवार के अन्य बच्चों से ही माता–पिता अपने बच्चों की तुलना करने लगते हैं उनके सामने लक्ष्य रख देते हैं कि घर का अमुक बच्चा अव्वल आया। अतः उसे भी कक्षा में अव्वल आना है। इस प्रतियोगिता की भावना के कारण बालक या तो घर का अन्य बच्चों के साथ समायोजित नहीं हो पाता या अत्यधिक आकांक्षा स्तर के कारण बालक के मन में दुश्चिंता एवं कुण्ठा घर कर जाती है।

किशोरावस्था में भी माता–पिता का यही व्यवहार होता है वह अन्य बच्चों से उनकी उपलब्धियों की तुलना करते रहते हैं। फलस्वरूप बालक के कोमल मन पर विपरित प्रभाव पड़ता है। वह अपने आस–पास के वातावरण के साथ समायोजित नहीं हो पाता है।

शोधकर्त्री ने अपनी समस्या के क्षेत्र में संयुक्त एवं एकल परिवार का चयन इस कारण किया है कि बालक का व्यवहार उसके पारिवारिक वातावरण से बहुत अधिक प्रभावित होता हैं शोधकर्त्री का मानना है कि यदि माता–पिता अपनी महत्वाकांक्षा को अपने बच्चों पर थोपने के बजाय उसे प्रोत्साहित करें, उसे एक स्वस्थ पारिवारिक वातावरण उपलब्ध कराए जिससे बालक में आत्मविश्वास जागृत हो सकेगा। इस अनुसंधान द्वारा संयुक्त व एकल परिवारमें रहने वाले उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का विश्लेषण कर उनके व्यवहार की समस्या को दूर किया जा सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. संयुक्त एवं एकल परिवार के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना :

1. संयुक्त परिवार के छात्र–छात्राओं की आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. एकल परिवार के छात्र–छात्राओं की आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. संयुक्त एवं एकल परिवार के छात्रों की आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. संयुक्त एवं एकल परिवार के छात्राओं की आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
5. संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों की आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

चर :

- **स्वतन्त्र चर** – संयुक्त एवं एकल परिवार
- **आश्रित चर** – आकांक्षा

न्यादर्श :

जोधपुर संभाग के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के 600 विद्यार्थियों को चयनित किया जाएगा।

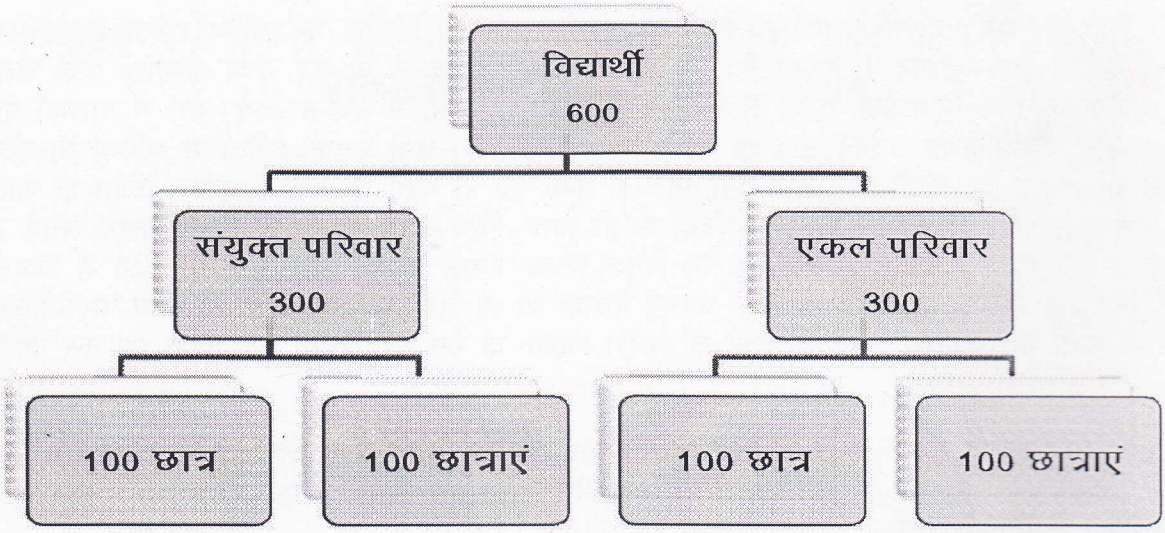

उपकरण : आकांक्षास्तर का मान : डॉ. महेश भार्गव तथा (स्व.) डॉ. एम.ए. शाह।

शोध विधि : सर्वेक्षण विधि

सांख्यिकी : मध्यमान, प्रमाप विचलन, t परीक्षण

आंकड़ों का विश्लेषण :

परिकल्पना नं. – 1 : संयुक्त परिवार के छात्र–छात्राओं की आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका 1

"संयुक्त परिवार के छात्र–छात्राओं के लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक (G.D.S), उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांक (A.D.S) तथा लक्ष्यों तक पहुंचने के प्रयासों का तुलनात्मक अध्ययन"

आकांक्षा स्तर	कुल संख्या		मध्यमान		प्रमाप विचलन		t मूल्य	स्वीकृत / अस्विकृत
	सं.प. छात्र	सं.प. छात्राएं	सं.प. छात्र	सं.प. छात्राएं	सं.प. छात्र	सं.प. छात्राएं		
G.D.S लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक	150	150	3.24	4.12	3.49	3.88	2.14	0.05 स्तर पर स्वीकृत 0.01 स्तर पर अस्वीकृत
A.D.S उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांक	150	150	2.23	2.24	3.77	4.39	0.02	स्वीकृत
N.T.R.S. लक्ष्यों तक पहुंचने के प्रयास	150	150	4.10	3.48	2.95	2.67	2.06	0.05 स्तर पर अस्वीकृत 0. 01 स्तर पर स्वीकृत

df = (300-2) = 298

0.05 स्तर पर t का मान 1.96

0.01 स्तर पर t का मान 2.58

विश्लेषण :

उक्त तालिका के आधार पर ज्ञात होता है कि संयुक्त परिवार के छात्र–छात्राओं के लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक (G.D.S) में आंशिक अन्तर पाया जाता है। छात्राओं में उच्च लक्ष्य निर्धारण पाया जाता है। किन्तु उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांक (A.D.S) में कोई अन्तर नहीं होता है दोनों समान लक्ष्य प्राप्त करते हैं तथा लक्ष्यों तक पहुंचने के प्रयासों में आंशिक अन्तर पाया जाता है। छात्र लक्ष्य तक पहुंचने के लिए अधिक प्रयास करते हैं।

परिकल्पना नं. – 2 : एकल परिवार के छात्र–छात्राओं की आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका 2

एकल परिवार के छात्र–छात्राओं के लक्ष्य भिन्नता (G.D.S) उपलब्धि भिन्नता (A.D.S) तथा लक्ष्यों तक पहुंचने के प्रयासो (N.T.R.S.) का तुलनात्मक अध्ययन।

आकांक्षा स्तर	कुल संख्या		मध्यमान		प्रमाप विचलन		t मूल्य	स्वीकृत / अस्विकृत
	सं.प. छात्र	एं.प. छात्राएं	ए.प. छात्र	ए.प. छात्राएं	ए.प. छात्र	ए.प. छात्राएं		
G.D.S लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक	150	150	3.15	4.34	3.67	3.86	2.90	अस्वीकृत
A.D.S उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांक	150	150	-1.82	-3.14	4.25	4.01	2.86	अस्वीकृत
N.T.R.S. लक्ष्यों तक पहुंचने के प्रयास	150	150	4.16	3.46	2.59	2.82	2.19	0.05 स्तर पर अस्वीकृत 0.01 स्तर पर स्वीकृत

विश्लेषण :

तालिका 2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि एकल परिवार के छात्र–छात्राओं के लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक (G.D.S) में अन्तर होता है। छात्राएं लक्ष्य उच्च निर्धारित करती है। वही छात्रों में उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांक (A.D.S) तथा लक्ष्यों तक पहुंचने के प्रयस छात्राओं से अधिक पाया गया है।

परिकल्पना नं. – 3 : संयुक्त एवं एकल परिवार के छात्रों की आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका 3

संयुक्त एवं एकल परिवार के छात्रों लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक (G.D.S), उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांक (A.D.S) तथा लक्ष्यों तक पहुंचने के प्रयासों का तुलनात्मक अध्ययन''

आकांक्षा स्तर	कुल संख्या		मध्यमान		प्रमाप विचलन		t मूल्य	स्वीकृत / अस्विकृत
	सं.प. छात्र	ए.प. छात्राएं	सं.प. छात्र	ए.प. छात्राएं	सं.प. छात्र	ए.प. छात्राएं		
G.D.S लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक	150	150	3.24	3.15	3.49	3.69	0.22	स्वीकृत
A.D.S उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांक	150	150	-2.23	-1.82	3.77	4.25	0.91	स्वीकृत
N.T.R.S. लक्ष्यों तक पहुंचने के प्रयास	100	150	4.10	4.16	2.95	2.99	0.19	स्वीकृत

df = (300-2) = 298

0.05 स्तर पर t का मान 1.96

0.01 स्तर पर t का मान 2.58

विश्लेषण :

तालिका 3 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि संयुक्त एवं एकल परिवार के छात्रो के लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक (G.D.S) में उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांक (A.D.S) तथा लक्ष्य तक पहुंचने के प्रयासों (N.T.R.S.) में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। संयुक्त एवं एकल परिवार के छात्रों की आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

परिकल्पना नं. – 4 : संयुक्त एवं एकल परिवार के छात्राओं की आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका 4

संयुक्त एवं एकल परिवार के छात्राओं की लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक (G.D.S), उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांक (A.D.S) तथा लक्ष्यों तक पहुंचने के प्रयासों (N.T.R.S.) का तुलनात्मक अध्ययन''

आकांक्षा स्तर	कुल संख्या		मध्यमान		प्रमाप विचलन		t मूल्य	स्वीकृत / अस्विकृत
	सं.प. छात्र	ए.प. छात्राएं	सं.प. छात्र	ए.प. छात्राएं	सं.प. छात्र	ए.प. छात्राएं		
G.D.S लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक	150	150	4.12	4.34	3.83	3.86	0.52	स्वीकृत
A.D.S उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांक	150	150	-2.24	-3.14	4.39	4.01	1.95	स्वीकृत

N.T.R.S. लक्ष्यों तक पहुंचने के प्रयास	150	150	3.48	3.46	2.67	2.82	0.06	स्वीकृत

विश्लेषण :

तालिका 4 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि संयुक्त एवं एकल परिवार के छात्राओ के लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक (G.D.S) में उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांक (A.D.S) तथा लक्ष्य तक पहुंचने के प्रयासों (N.T.R.S.) में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। संयुक्त एवं एकल परिवार के छात्राओं की आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

परिकल्पना नं. – 5 : संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों की आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका 5

संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों के लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक (G.D.S), उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांक (A.D.S) तथा लक्ष्यों तक पहुंचने के प्रयासों (N.T.R.S.) का तुलनात्मक अध्ययन''

आकांक्षा स्तर	कुल संख्या		मध्यमान		प्रमाप विचलन		t मूल्य	स्वीकृत / अस्विकृत
	सं.प. वि.	ए.प. वि.	सं.प. वि.	ए.प. वि.	सं.प. वि.	ए.प. वि.		
G.D.S लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक	300	300	3.68	3.75	3.66	3.76	0.25	स्वीकृत
A.D.S उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांक	300	300	-2.23	-2.48	4.09	4.13	0.80	स्वीकृत
N.T.R.S. लक्ष्यों तक पहुंचने के प्रयास	300	300	3.79	3.81	2.82	2.91	0.10	स्वीकृत

विश्लेषण :

तालिका 5 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों के लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक (G.D.S) में उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांक (A.D.S) तथा लक्ष्य तक पहुंचने के प्रयासों (N.T.R.S.) में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध का निष्कर्ष :

1. संयुक्त परिवार की छात्राओं में लक्ष्य निर्धारण संयुक्त परिवार के छात्रों की अपेक्षा अधिक उच्च पाया जाता है। यद्यपि लक्ष्य प्राप्ति में कोई अन्तर नहीं होता है। छात्र छात्राओं की अपेक्षा लक्ष्य प्राप्ति हेतु अधिक प्रयास करते हैं।

1. एकल परिवार के छात्र–छात्राओं में लक्ष्य निर्धारण समान होता है किन्तु छात्राएं उपलब्धि अधिक प्राप्त करती है वह भी छात्रों से कम प्रयास में छात्र लक्ष्य प्राप्ति हेतु अधिक प्रयास करते हैं।
2. संयुक्त एवं एकल परिवार के छात्रों के आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. संयुक्त एवं एकल परिवार की छात्राओं के आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. संयुक्त एवं एकल परिवार के छात्र–छात्राओं की आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शैक्षिक निहितार्थ :

1. बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु आवश्यक है कि उन्हें परिवार में स्नेहशील वातावरण प्राप्त हो। बालकों को उत्साहपूर्ण सहिष्णुता, ममतामय सुरक्षित वातावरण उपलब्ध करवाये। उन पर उनकी क्षमता से अधिक आकांक्षा का बोझ न डाले।
2. पाठ्यक्रम रोजगारोन्मुख एवं आत्मनिर्भर बनाने वाला हो ताकि वह बालकों की आकांक्षा की पूर्ति में सहायक हो सके।
3. अभिभावक छात्र–छात्रा में भेद न करें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. अस्थाना, डॉ. विपिन, 2007 : मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
2. भार्गव, उषा, 1993 : किशोर मनोविज्ञान, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
3. गैरिट एच.ई., 1970 : स्टेटिस्टिक इन साइकॉलोजी एण्ड एजूकेशन, न्यूर्याक
4. रमा मैजुरी, 2010 : लघु परिवार के प्रति विभिन्न संकायों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति, नया शिक्षक जनवरी–मार्च, 2010